राजकुमार वर्धमान के विवाह प्रकरण को लेकर मतभेद हैं। आचाराङ्ग और कल्पसूत्र में वर्धमान के विवाह का कोई वर्णन नहीं आया है, पर जहाँ भगवान् महावीर स्वामी के सम्बंधियों का परिचय दिया गया है, वहाँ उनकी पत्नी का नाम यशोदा, पुत्री का नाम प्रियदर्शना और आनवद्या एवं दोहित्री का नाम शेशवती आया है, जो यशस्वती के नाम से भी विश्रुत थीं इससे सिद्ध होता है कि उन्होंने विवाह किया था।[1]

चउप्पनमहापुरिसचरियं में भगवान् की किसी भी पत्नी का नामोल्लेख न कर अनेक कन्याओं के साथ पाणिग्रहण बतलाया है।[2] लघुत्रिशष्टिशलाका पुरुष चरितम् के अनुसार भगवान् का विवाह केवल यशोदा से हुआ था–

राजा समरवीरः स्वां यशोदां मन्त्रिभिः समम्।
पुत्री वीरविवाहाय प्रैषीत शेषीकृताहितः।।[3]

तीस वर्ष की अवस्था होने पर वैराग्य से युक्त भगवान् दीक्षित होने के लिये कृत प्रतिज्ञ हुए फिर भी नौ लौकान्तिक जीतकल्पी देवों ने भगवान् की स्तुति करते हुए निवेदन किया कि हे नन्द आनन्दमय प्रभो! आपकी जय विजय हो, हे उत्तमोत्तम क्षत्रिय वृषभ! आप बोध प्राप्त करें और जगत् के समस्त जीवों का हित, सुख और निःश्रेयस करने वाले धर्मतीर्थ-धर्मचक्र का प्रवत्तन करें।[4] तो भगवान् महावीर ने राज्यादि समस्त वैभव, धन, धान्य, सम्पत्ति और सभी स्वजन-सम्बन्धियों के ममत्व का त्यागकर मृगशिरा कृष्णा 10 के दिन विजयमुहूर्त में ज्येष्ठ भ्राता नन्दिछवर्धन की आज्ञा से निर्जल वेले की तपस्या से सिद्धों को नमस्कार कर दीक्षा वृत्ति अंगीकार की।[5]

दीक्षा लेते ही भगवान् महावीर को मनपर्ययज्ञान उत्पन्न हो गया। दीक्षा के समय भगवान ने एक कठोर अभिग्रह धारण किया था, वह अभिग्रह है–आज से साढ़े बारह वर्ष पर्यन्त जब तक केवलज्ञान उत्पन्न नहीं हो जाता, तब तक देह का ममत्व त्यागता हूँ अर्थात् आगत उपसर्ग एवं कष्टों को मैं समभावपूर्वक सहन करूंगा।

1. कल्प०सू० 107-109
2. चउप्पन महापुरिस, पृ० 272
3. लघु त्रिषष्ठि०, पृ० 308
4. कल्प०सू०, 110
5. वही, पृ० 163

दीर्घकाल की तपस्या में भगवान् को जो अनेक प्रकार के अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग सहन करने पड़े, उन सब में कानों से कीलें निकालने का उपसर्ग सबसे अधिक कष्टप्रद रहा। जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट इन सभी उपसर्गों में भगवान् ने समभाव से महती कर्म निर्जरा की, जिससे उन्हें अनुत्तर ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र गुणों की उपलब्धि हुई और इनसे आत्मा को भावित करते हुए भगवान् महावीर स्वामी को वैशाख शुक्ला दशमी को ऋजुबालिका नदी के तट पर लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

केवलज्ञान उत्पन्न होने के पश्चात् भगवान् ने चतुर्विध संघ की स्थापना की और लोगों के कल्याण के लिये उपदेश दिया।

72 वर्ष की अवस्था में 42 वर्ष की संचय पर्याय पूर्ण कर हस्तिपाल राजा की पौषधशाला में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सिद्ध-बुद्ध एवं मुक्त हुए।

2. गौतम स्वामी

जैनशासन में तीर्थङ्कर परम्परा का क्रमबद्ध इतिहास है। गणधर परम्परा तीर्थङ्कर परम्पस के इतिहास की अविच्छिन्न कड़ी है। तीर्थङ्कर के शासनकाल में गणधरों का अभ्युदय होता है।

सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थङ्कर श्रमण भगवान् महावीर के शासन में ग्यारह गणधर थे, जिनमें विद्या विशारद इन्द्रभूति गौतम प्रथम पट शिष्य बने।

राजगृह के समीपवर्ती ग्राम के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व इन्द्रभूति के नाम से तेजस्वी मेघा सम्पन्न एक बालक का जन्म हुआ।[1] इनके पिता वसुभूति और माता का नाम पृथिवी था।[2] यह वैदिक दर्शन के प्रकाण्ड पण्डित थे। इनके दो भाई अग्निभूति और वायुभूति भी वैदिक दर्शन में ही पारंगत थे। ब्राह्मण गौतम का श्रमण भूमिका तक पहुँचने का इतिहास अत्यन्त रोचक है। सर्वज्ञत्वोपलब्धि के पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर जंभियग्राम से मध्यमा पावापुरी पधारे। उसी नगर में सोमिल ब्राह्मण महायज्ञ कर रहा था। वेदविज्ञ 11 विद्वान् सोमिल के यज्ञानुष्ठान की सफलता के लिये वहाँ आए हुए थे। उनके साथ चवालीस सौ शिष्यों का परिवार था।

1. आव०नि० 643
2. वही, 647-648

देवों एवं जनसमूह के महावीर के पावन प्रचन को श्रमण करने आने के कारण उन्हें परास्त करने की दृष्टि से सर्वप्रथम इन्द्रभूति गौतम अपेन मेधावी 500 शिष्यों के साथ समवसरण में पहुँचे। अपनी ज्ञान राशि से वे सर्वज्ञ भगवान् महावीर को अभिभूत कर देना चाहते थे, पर भगवान् महावीर के चरणों में फलों से लदी शाखा की भान्ति झुक गए। वे भगवान् को समझाने आए थे, स्वयं समझ गए। सर्वतोभावे भगवान् महावीर के चरणों में समर्पित होकर उन्होंने श्रमण धर्म की भूमिका में प्रवेश पाया। संयम साधना स्वीकार करने बाद उन्हें गणधरलब्धि की प्राप्ति हुई और वे गणधर कहलाये। भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यमयी त्रिपदी के आधार पर उन्होंने द्वादशांगी की रचना की।[1]

भगवतीसूत्र में गणधर गौतम का परिचय जिस प्रकार उपलब्ध होता है, वह है कि वह घोर तपस्वी, चौदह पूर्व के ज्ञाता, चतुर्ज्ञानी, सर्वाक्षर सन्निपाती एवं तेजस् लब्धि के धारक थे।[2] उपासकदशांगसूत्र के अनुसार वे छट्ठ-छट्ठ तप के अनन्तर पारणा करते थे।[3]

गौतम स्वामी नम्रता की साक्षात् मूर्ति थे। सत्य के प्रति उनकी गहरी निष्ठ थी। सत्य को स्वीकार करने में वे किंचित् मात्र भी संकोच नहीं करते थे। आनन्द श्रमणोपासक से वे क्षमायाचना हेतु पधारे थे, जो उनकी विनम्रता एवं सत्य निष्ठ का प्रतीक है। उनमें उपदेश देने की विलक्षण शक्ति थी। भगवान् महावीर के परिनिर्वाण के समय गणधर गौतम अन्यत्र प्रबोध देने गए हुए थे। भगवान् के परिनिर्वाण की सूचना पाकर छद्मस्थता के कारण गौतम स्वामी मोह विह्वल हो गए। उनका हृदय अनुताप से भर गया। चिन्तन की धारा अन्तर्मुखी बनी। मोह का दुर्भेद्य अवरण हटा और केवलज्ञान-केवलदर्शन का आलोक जगमगाने लगा। गौतम सर्वज्ञ बन गए।

इस प्रकार गौतम स्वामी ने पचास वर्ष की आयु में दीक्षा ली थी, 30 वर्ष तक वे छद्मस्थ और 12 वर्ष तक केवली पर्याय में रहते हुए गौतम गणधर 92 वर्ष की आयु में गुणशील चैत्य में मासिक अनशन करके परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।[4]

3. आर्य सुधर्मा स्वामी

आर्य सुधर्मा स्वामी भगवान् महावीर स्वामी की परम्परा के ज्योतिर्धर आचार्य

1. जग्रन्थ द्वादशाङ्गी भवजलधितरीं ते निषद्यात्रेण।। विविध०, पृ० 25
2. व्याख्या० 1
3. उपा० 1/73
4. आव०नि० 655

थे, जिनकी गणना पांचवें गणधर के रूप में की जाती है। वर्तमान में जो श्वेताम्बर आगम वाचना उपलब्ध है, वह आपश्री जी के द्वारा ही प्ररूपित है।[1] आगमों के प्रारम्भ में ऐसा प्रश्न आता है कि जब सुधर्मा स्वामी के शिष्य अन्तिम मोक्षगामी जम्बू स्वामी से पूछते हैं कि हे प्रभो! मोक्षगामी श्रमण भगवान् महावीर द्वारा प्ररूपित ज्ञाताधर्मकथासूत्र का अर्थ मैंने आपके श्रीमुख से सुन लिया है, अब उपासकदशांगसूत्र का क्या अर्थ है, उसे बतलाने की कृपा करें।[2]

उक्त वार्तालाप से स्पष्ट ज्ञात होता है कि आपने सभी आगम श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से जैसे सुने थे, वैसे ही अपने शिष्यों को भी बतलाए हैं। श्वेताम्बर जैन मान्यता के अनुसार भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के मध्य में जो संवाद हुआ, उसे ही आर्य सुधर्मा ने अपने शिष्यों को विरासत में दिया था।

आगमों एवं ऐतिहासिक पुस्तकों में आता है कि भगवान् महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् वीर सम्वत् के प्रारम्भ में कार्तिक शुक्ला एकम् के दिन चतुर्विध संघ ने आर्य सुधर्मा को भगवान् महावीर के प्रथम आचार्य के रूप में नियुक्त किया।[3]

आर्य सुधर्मा का जन्म कोल्लाग सन्निवेश के निवासी अग्नि वैश्यायन गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम धम्मिल एवं माता का नाम भद्दिला था। आप वेद, उपनिषद् इतिहास और व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। आपके मन में एकमात्र यहीं शंका थी कि जीव जैसा इस भव में है, वैसा ही वह परभव में भी होगा अथवा नहीं।

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के केवलज्ञन प्राप्ति पर इन्द्रभूति गौतम, अग्निभूति, वायुभूति और आर्यव्यक्त जैसे उच्चकोटि के विद्वान् अपनी शंकाओं का समाधान पाकर श्रमण धर्म में दीक्षित हो गए थे, तो आर्य सुधर्मा स्वामी भी चिरकाल से संचित निगूढ़ शंका का समाधान पाने हेतु भगवान् के चरणों में पहुँचे।[4] भगवान्

1. यदिति श्रुतमस्मामिः पूर्वेषाम् सम्प्रदायतः।
   चतुर्दशापि पूर्वाणि, संस्कृतानि पुरामवन्।।
   प्रज्ञातिशयसाध्यानि, तान्युच्छिन्नानि कालतः।
   अधुनैकादशांगयस्ति, सुधर्मास्वामिभाषिता।। प्रभा० 8/113-114
2. उपा०सू० 1/2
3. जैनधर्म का मौलिक इतिहास, पृ. 47
4. ते पव्वइए सोउं, सुहम्मो आगच्छइ जिणसगासं।
   वच्चामि णं वंदामि, वंदिता पज्जुवासामि।। आ०नि० 1/614

महावीर स्वामी से अपनी शंका का समाधान पाकर 50 वर्ष की आयु में सुधर्मा स्वामी भगवान् के चरणों में दीक्षित हो गये। उनके साथ 500 शिष्यों का परिवार था, वह भी श्रमण धर्म में प्रवर्जित हुआ।[1]

आगम ग्रन्थों में आर्य सुधर्मा स्वामी की विशेषताएँ बताते हुए उन्हें जाति सम्पन्न, कुल सम्पन्न, बल, रूप एवं ज्ञान से युक्त, क्षायिक सम्यक्त्ववान, लाघववान्, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध, मान-माया-लोभ को जीतने वाले, जीवित रहने की कामना और मृत्यु के भय से रहित, आर्जव, मार्दव, लाघव, क्षमा, मुक्ति, मन्त्र, नय, विद्या, नियम, सत्य, शौच, ज्ञान दर्शन एवं चरित्रप्रधान बताया गया है।[2]

आर्य सुधर्मा स्वामी भगवान् महावीर की परम्परा के दीर्घजीवी आचार्य थे। अग्निभूति गणधर आदि नौ गणधर आर्य सुधर्मा स्वामी को दीर्घजीवी समझ उन्हें अपना-अपना गण सौंपकर भगवान् की विद्यमानता में ही सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गए, अतः क्रमशः उनके निर्वाण से एक-एक मास पूर्व उनके गणों का आर्य सुधर्मा के गण में विलय हो गया और उन नौ गणधरों के गणों के सभी श्रमण आर्य सुधर्मा के अन्तेवासी कहलाने लगे।[3]

महावीर निर्वाण के 12 वर्ष बाद आर्य सुधर्मा स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ और बीस वर्ष के पश्चात् सौ वर्ष की अवस्था में मासिक अनशन पूर्वक राजगृह के गुणशीनक चैत्य में निर्वाण प्राप्त किया।[4]

4. जम्बू स्वामी

भगवान् महावीर स्वामी के प्रथम पट्टधर आर्य सुधर्मा स्वामी के परिनिर्वाण के पश्चात् उनके प्रमुख शिष्य आर्य जम्बू स्वामी ईसा से 507 वर्ष पूर्व और वीर निर्वाण सम्वत् 20 में धर्म संघ के द्वितीय आचार्य बने थे।

जम्बू स्वामी का सम्बन्ध भी राजगृह से रहा। आप वणिक् परिवार से थे। आपके पिता का नाम ऋषभदत्त और माता का नाम धारिणी था। आपका जन्म ठीक

1. निरया०सू० 1/2
2. ज्ञाता० 1/4
3. आव०नि० 658
4. वही, 655

वीर निर्वाण के 16 वर्ष पूर्व हुआ था। जन्म से पूर्व मां ने स्वप्न में जम्बू वृक्ष को देखा था, जिसके कारण आपका नाम जम्बू कुमार रखा गया था।[1]

युवा होने पर आपका विवाह आठ रूपवती कन्याओं के साथ हुआ था, किन्तु वैराग्य का रंग आप पर इतना चढ़ चुका था कि आपने अपने कुटुम्बिक जनों को प्रतिबोधित किया, जिसके परिणामस्वरूप आपके माता-पिता, आठों पत्नियों सहित उनके माता-पिता, प्रभव और उनके पाँच सौ साथियों के साथ आपने भी स्वयं विधिवत् भागवती दीक्षा अंगीकार की थी। इस प्रकार 99 करोड़ मुद्राओं और 8 रमणी रतनों को त्याग कर जम्बूस्वामी 527 मुमुक्षुओं के साथ आर्य सुधर्मा स्वामी के पास दीक्षित हुए थे। आपकी जिज्ञासाओं का ही परिणाम है कि आज श्वेताम्बर आगमों के रूप में भगवान् की वाणी हमें प्राप्त होती है।

ज्ञाताधर्मकथासूत्र में जम्बू स्वामी की विशेषताएँ बताते हुए कहा है कि वह उग्र तपस्वी, कर्म वन को दग्ध करने के लिये अग्नि के समान तेजोमय तप वाले, तप्त तपस्वी, महा तपस्वी, उदार, घोर कषायादि शत्रुओं के उन्मूलन में कठोर, ब्रह्मचर्य में लीन शारीरिक संस्कारों का त्याग करने वाले, तेजो लेश्या को शरीर में अवस्थित करने वाले थे।[2] स्वयं भगवान् महावीर स्वामी ने जम्बूस्वामी को इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र का अन्तिम केवली कहा है।[3]

आर्य जम्बूस्वामी सोलह वर्ष तक गृहस्थ पर्याय में रहे फिर दीक्षा ग्रहण कर बीस वर्ष तक गुरु सेवा के साथ-साथ ज्ञानोपार्जन, तपश्चरण और संयम साधन में संलग्न रहे। तत्पश्चात् चवालीस वर्ष तक महावीर शासन के द्वितीय आचार्य के पद पर आसीन हुए। अंत में वीर निर्वाण सम्वत् 64 तदनुसार जम्बू स्वामी ने अस्सी वर्ष की आयु पूर्ण कर अक्षय अव्याबाध निर्वाण सुख प्राप्त किया।[4]

1. जम्बूस्वामी के जन्म विषयक एक भिन्न वृत भी प्रचलित है जिसमें कहा गया है कि उनकी माँ ने उनके गर्भ में आने से पूर्व एक श्वेत सिंह को देखा थ, जो उनके कैवल्य की उपलब्धि को दर्शाता है।
2. ज्ञाता० 1/6
3. श्रेष्ठिऋषभदतस्य जम्बूः पुत्राऽन्त्यकेवली ।। परि० 4/64
4. बीओ जंबूत्ति, श्रीसुधर्म्मस्वामिपट्टे श्रीजम्बूस्वामी। स च नवनवतिकोटिसंयुक्ता अष्टौ कन्यकाः परित्यज्य श्रीसुधर्म्मस्वाम्यन्तिके प्रव्रजितः। स च षोडश वर्षाणि ग्रहस्थपर्याय, विंशति वर्षाणि व्रतिपर्याये। चतुश्चत्वारिंशद् वर्षाणि युगप्रधानपर्याये चेति सर्वायुरशीति वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् चतुःषष्टि वर्षे सिद्धः।। ताप०, पृ० 5

5. राजा जितशत्रु

राजा जितशत्रु नाम के किसी भी राजा का उल्लेख ऐतिहासिक ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होता। जितशत्रु का अर्थ है–शत्रु को जीतने वाला। ऐसे प्रतीत होता है कि जितशत्रु किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर विशेषण के रूप में माना गया है। अजातशत्रु और विक्रमादित्य की तरह यह एक उपाधिमात्र ही थी।

उपासकदशांगसूत्र के अनुसार जितशत्रु वाणिज्यग्राम, चम्पा, वाराणसी, आलंभिया, काम्पिल्यपुर, पोलासपुर एवं श्रावस्ती इन सातों राज्यों पर शासन करते थे।

उपासकदशांगसूत्र के अनुवाद में डॉ० हर्नले वाणिज्यग्राम के राजा जितशत्रु और राजा चेतक को एक ही व्यक्ति मानते हैं।[1]

6. राजा श्रेणिक

श्रेणिक श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के अनुनायी राजाओं में सर्वाधिक विश्रुत हैं। आगमों में अनेक स्थलों पर श्रेणिक राजा का उल्लेख मिलता है। इन्हें सेनिय, भंभसार, भिभिसार और बिम्बिसार भी कहा गया है। श्रेणिक पुत्र मेघकुमार, नन्दिसेन आदि भगवान् महावीर के संघ में दीक्षित हुए थे। इनके पुत्र अभय कुमार भी दीक्षित हुए थे।

उपासकदशांगसूत्र में श्रेणिक राजगृह का राजा माना गया है।[2]

7. गोशालक

गोशालक का पूरा नाम मंखलिपुत्र गोशालक था। भगवान् महावीर स्वामी के काल में वह मुख्य चर्चास्पद व्यक्ति रहा है। भगवान् के अनुपम अतिशयशाली व्यक्तित्व से वह बहुत प्रभावित हुआ और भगवान् के छद्मस्थ काल में ही छह वर्ष तक वह भगवान् के साथ रहा। उसने विपुल तेजो लेश्या प्राप्त की थी। बाद में वह भगवान् का प्रतिस्पर्धी बन गया और आजीवक सम्प्रदाय का तीसरा आचार्य बना। आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी गोशालक को अर्हत, जिन, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी एवं तीर्थंकर कहकर उसकी पर्युपासना करते थे।

उपासकदशांगसूत्र में गोशालक और उसके सिद्धान्त का वर्णन दो बार प्राप्त होता है। प्रथम कुण्डकोलिक के प्रसंग में और दूसरा सद्दालपुत्र अध्ययन में। गोशालक का सिद्धान्त नियतिवाद कहलाता है।

---

1. भगवान् महावीर : एक अनुशीलन, पृ० 23
2. उपा०सू० 1/227

उपसंहार

जैन आप्त, सर्वज्ञ केवली द्वारा प्रज्ञप्त धर्म को सर्वाधिक बहुमान देते हैं, उन्हें श्रद्धा से देखते हैं और उनकी सम्यक् आराधना भी करते हैं। ऐसे सूत्ररूप में अरिहन्त तीर्थङ्कर की दिव्यवाणी का आचाराङ्ग सूत्राकृताङ्गादिक ग्यारह अङ्ग ग्रंथों में संगायन किया गया है जिसमें निर्ग्रन्थ श्रमणों तथा उपासकों वा सद्गृहस्थों के लिये आराधनीय तथा आचरणीय धर्म का उपमा-उदाहरणों तथा कथावृत्तान्तों के माध्यम से यथार्थ प्रतिपादन मिलता है। वर्तमान कलिकाल में आचार्य, उपाध्याय एवं सर्वसाधु परमेष्ठी ही अरिहन्त भगवान् के प्रतिनिधि हैं। ऐसे तपोनिष्ठ अपरिग्रही, वीतरागी श्रमण सन्त, मुनि अथवा साधु के निकट में, उनकी शरण में जाकर उनके द्वारा उपदिष्ट धर्म को सुनकर अपने जीवन में आचरण करने वाली भव्यात्मा उपासक अथवा श्रावक कहलाती है।

आनन्द, कामदेव, सद्दालपुत्र आदि ऐसी ही यथार्थ-तत्त्वज्ञानी सदृष्टा दश सागारियों द्वारा आचरित धर्म-दर्शन का वर्णन करने वाला ग्रन्थ है सातवां अंग–उपासकदशाङ्गसूत्र।

अर्द्धमागधी प्राकृत में निबद्ध उपादेय कथाग्रन्थ उपासकदशांगसूत्र पर प्राचीन संस्कृत टीका से व्यतिरिक्त अंग्रेजी, गुजराती आदि कतिपय भारतीय आधुनिक भाषाओं में भी व्याख्याएँ लिखी मिलती हैं तथा परवर्तीकाल में अनेकानेक तत्त्ववेता विद्वान् आचार्यों ने उपासक व श्रावक धर्म पर अपनी-अपनी कृतियों में यथास्थान प्रकाश डाला है साथ ही स्वतन्त्र रूप में भी मौलिक ग्रन्थों की रचा की है जिनका प्रबन्ध के प्रारम्भ में विस्तृत विवरणात्मक परिचय दिया गया है।

तत्त्वों अथवा पदार्थों का जो यथार्थ स्वरूप है उसका वैसा ही श्रद्धान करना, उन्हें उस-उस रूप में ही देखना सम्यग्दर्शन वा सम्यक्त्व है। उन्हीं का यथार्थ बोध करना सम्यग्ज्ञान और पवित्र, संयमित मानव का सदाचारमय जीवन ही सम्यक्चारित्र कहलाता है। इसी मोक्षमार्गरूप रत्नत्रय का विवेचन द्वितीय अध्याय में करते हुए मुक्ति के अभिलाषी, न्यायप्रिय, संयमी, ज्ञानी उपासक के लिये आचरणीय सद्गुणों का प्रकाशन कर उसे द्यूत, मांसाहार, मद्यपान, चोरी तथा परस्त्रीगमन आदि जैसे सात दुर्गुणों से भी सदैव दूर रहना चाहिये। इस अध्याय में इनका गम्भीर चिन्तन किया गया है।

जैन सद्गृहस्थ स्थूल (अणु) रूप में अहिंसा धर्म का परिपालन करता हुआ यथार्थ (सत्य), हितमित्र प्रिय वाणी बोलता है और परायीवस्तु के ग्रहण की इच्छा करना तो दूर की बात है वह उस पर अपनी दृष्टिपात भी नहीं करता। ऐसा अपरिग्रही श्रावक अपने माता-पिता एवं बन्धु-बान्धवों की स्वीकृतिपूर्वक गृहीत अपनी पत्नी में सन्तुष्ट रहता है अर्थात् स्वदार संतोषी होता है। भोगोपभोग के पदार्थों का परिमाण करता हुआ संयमी गृहस्थ सामायिक, उपवास तथा अतिथ सम्मान में सदैव तत्पर रहता है।

ऐसा द्वादश व्रतों का परिपालक सागारी यदि संन्यास धारण करने का अभिलाषी होता है तो उसे गृहस्थाश्रम में निष्कामभाव से रहते हुए ग्यारह दर्शन तथा ब्रह्मचर्य आदि प्रतिमाओं पर आचरण करना परमावश्यक है। तदनन्तर ही वह मुनिपद धारण करने का अधिकारी बनता है। इन्हीं व्रतों, प्रतिमाओं पर विशेष प्रकाश डालते हुए प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में षड् आवश्यकों, द्वादश तपों तथा सल्लेखना की विधि, उसके भेद तथा उसकी मानव के जीवनान्त में ग्रहण करने की महत्ता पर आचार्यों की दृष्टि से ग्रहण विवेचना की गयी है।

भूलोक के विषय में जैनों का अपना मौलिक चिन्तन है। इनके मतानुसार समस्त भूमण्डल ऊर्ध्व, मध्य एवं अधो इन तीन लोकों में विभक्त है। शीत-उष्ण सप्त नरकों तथा त्रिवलयाकार वाला अधोलोक बतलाया गया है। स्वर्गलोक ही ऊर्ध्वलोक है जिसमें भवनवासी, व्यन्तर, चन्द्र-सूर्यादि ज्योतिषी तथा वैमानिक देवों का निवास है। मध्यलोक नवद्वीप वाला बतलाया गया है किन्तु अढ़ाईद्वीप की अधिक महत्ता है। मध्यवर्ती जम्बुद्वीप का विस्तृत वर्णन जैन ग्रन्थों में किया गया है जिससे दुगुना दूसरा धातकीखण्ड द्वीप है तथा इससे भी अधिक दुगुना द्वीप पुष्करार्ध है जिसके मध्य में विशाल उतुङ्ग वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है। मानुषोत्तरपर्वत के कारण ही पुष्करद्वीप के दो भाग हो जाते हैं। आधे पुष्कर द्वीप को मिलाकर अढ़ाई द्वीप को ही मध्यलोक समझा जाता है। जिसका ब्यौरेबार वर्णन चतुर्थ अध्याय में किया गया है।

उपासकदशांगसूत्र कालीन समाज एवं संस्कृति के सन्दर्भ में वर्णाश्रम व्यवस्था, परिवारिक जीवन, नारी का स्थान, दास प्रथा, न्याय व्यवस्था, शासन, प्रशासन के विभिन पहलुओं, दण्डव्यवस्था, व्यापार, आवागमन के साधन, खेतीबाड़ी, उसके साधन, पशुपालन, खानपान, चिकित्सापद्धति, वस्त्राभूषण, सौन्दर्य प्रसाधन के विविध द्रव्य, मनोरंजन के विभिन्न प्रकार आदि का प्रतिपादन करना पंचम अध्याय का विषय है। इसके अलावा इसी पंचम अध्याय में विशिष्ट व्यक्तियों नगरों, ग्रामों, उपनगरों, चैत्यों, उद्यानों इत्यादि पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) उपासकदशांगसूत्र : मूल

1. उवासगदसाओ, (सं०) मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, वि०सं० 2037.
2. उपासकदशांगसूत्र, (सं०) घासीलाल जी म०, श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, करांची, वि०सं० 1993.
3. उपासकदशांगसूत्र, (सं०) साध्वी उर्वशी, प्रेम जिनागम प्रकाशन समिति, बम्बई, वि०सं० 2031.
4. उपासकदशांगसूत्र, जीवराज धेलाभाई दोशी, अहमदाबाद।
5. उपासकदशांगसूत्र, अमोलक ऋषि, सिकन्दराबाद जैन संघ, हैदराबाद, सन् 1972.
6. उपासकदशांगसूत्र, पी०एल० वैद्य, पूना, 1987.
7. उपासकदशांग सूत्र, (सं०) धीसुलाल पितलिया, अ०भा० साधु मार्गी संस्कृति रक्षक संघ, सैलाना, वि०सं० 2034.
8. उपासकदशांगसूत्र, (सं०) धीसुलाल पितलिया, अ०भा० साधु मार्गी संस्कृति रक्षक संघ, सैलाना, वि०सं०, 2034
9. उपासकदशांगसूत्र, (अंग्रेजी) हार्नले – बंगाल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् 1947.
10. उवासगदसाओ, श्री अभयदेव टीकानुवाद युक्त, पं० भगवानदास हर्षचन्द, जैनानन्द पुस्तकालय गोपीपुरा, सूरत-1992.
11. उपासकदशांगसूत्र, (टीका) आ० अभयदेव, राय धनपत सिंह बहादुर, अजीमगंज, 1933.
12. श्री मदुपासकदशांगसूत्रम्, (टीका) साध्वी विनय श्री जी०म० हिन्दी जैनागम प्रकाशक समिति कार्यलय जैन प्रेस कोटा, सन् 1946.

(ख) अन्य सहायक ग्रन्थ

1. अंगुतर निकाय, हिन्दी अनुवाद-अनु० भदन्त आनन्द कौसल्लायायन प्रका० महाबोधि सभा, कलकत्ता, सन् 1957.

2. अथर्ववेद, मूल।
3. अभिधानचिन्तामणिकोष, आचार्य हेमचन्द्र, प्रका० हमचन्द्राचार्य सभा, पाटण (उत्तर गुजरात)।
4. अभिनव प्राकृत व्याकरण, श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स वाराणसी, सम्वत् 2020.
5. अमितगति श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-1 (सं०) पं० हीरा लाल सिद्धान्तमाला, शोलापुर, सन् 1976.
6. अमृत महोत्सव गौरव ग्रन्थ, अखिल भारतवर्षीय श्वेतामबर स्थानकवासी जैन कान्फ्रैंस, 12 शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली, सन् 1988.
7. अन्तकृद्दशांगसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1981.
8. अनुयोगद्वारसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1987.
9. अनुत्तरौपपातिकसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1981
10. आउट लाईन ऑफ जैन फिलासफी, डॉ० मोहन लाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी सन् 1971.
11. आगम और त्रिपिटक : एक अनुशीलन-1, मुनि श्री नागराज जी, डी०लिट्०, नौरंग राय कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, एच०-13 बाली नगर, नई दिल्ली।
12. आगम युग का जैन दर्शन, पं० दलसुख मालवणिया, सन्मति ज्ञानपीठ आगरा, सन् 1966.
13. आचारांगसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1980.
14. आचारांगसूत्र (निर्युक्ति), श्री भद्रबाहुस्वामी, श्री ऋषभदास केशरी मल संस्था, रतलाम, सन् 1935.
15. आचारांगसूत्र (चूर्णि), श्री जिनदासगणि, श्री ऋषभदास केशरी मल संस्था, रतलाम, सन् 1941.
16. आवश्यक चूर्णि, श्री जिनदास गणि, श्री ऋषभदास केशरी मल संस्था, रतलाम, सन् 1928-29.

17. आवश्यक निर्युक्ति, मलयगिरिवृत्ति, आगमोदय समिति बम्बई, सन् 1928.
18. आवश्यकसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, सन् 1981.
19. उत्तराध्ययनसूत्र, (सं०) उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द्र जी म०, आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, जैन स्थानक, लुधियाना, वि०सं० 2039.
20. उपासकाध्ययन, (सं०) पं० श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी सन् 1964.
21. उमास्वामि श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-3, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्ताचार्य, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
22. औपपातिकसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1972.
23. ऋग्वेद संहिता, (सं) पं० श्री पाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, सन् 1989.
24. कल्पसूत्र, (सं०) श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर।
25. कसायपाहुड, (जयधवला टीका) आचार्य गुणधर, (सं०) पं० श्री फूल चन्द्र शास्त्री, मथुरा, सन् 1944.
26. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
27. कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन, श्री प्रेमसुमन जैन, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, वि०सं० 2032.
28. कौटिल्य अर्थशास्त्र, प्रस्तुति राकेश शास्त्री, साधना पॉकेट बुक्स, 39, यू०ए० बैग्लो रोड, दिल्ली, सन् 1986.
29. गुणभूषण श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-2, (सं०) पं० श्री हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
30. गोम्मटसार, पं० खूबचन्द्र जैन, श्री परमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द आश्रम, अगास वि०सं० 2041.
31. गोम्मटसार, (जीवकाण्ड) आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, संकलन कर्त्री आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती माता जी, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर, सन् 1988.

32. गृहस्थ धर्म, 1, 2 आचार्य श्री जवाहर लाल जी म०, (सं०) पं० शोभा चन्द्र जी भारिल्ल, श्री जवाहर साहितय समिति, बीकानेर, वि०सं० 2014.
33. गृहस्थ धर्म श्रमण श्री फूलचन्द जी म०, आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, जैन स्थानक, लुधियाना।
34. क्षत्रचूड़ामणि, वादीभजिह, मोहनलाल काव्यतीर्थ जबलपुर।
34. चउप्पन महापुरिस चरिय, (सं०) अमृत लाल भोजक, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी।
35. चाणक्य नीति, श्री खेमराज श्री कृष्णदास, श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई।
36. चारित्रपाहुड (अष्ट पाहुड), अनु० पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य, श्री शान्तिवीर दिगम्बर जैन संस्थान, श्री शान्तिवीर नगर, श्रीमहावीर, जी वि०सं० 2494.
37. चारित्रसार, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० श्री हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1976.
38. जातक, पंचम खण्ड।
39. जैन आगम दिग्दर्शन, डॉ० मुनि नथमल, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान जयपुर, सन् 1980.
40. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज, डॉ० श्री जगदीश चन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सन् 1965.
41. जैन आचार, डॉ० मोहन लाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, सन् 1966.
42. जैन आचार : सिद्धान्त और स्वरूप, श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल उदयपुर, सन् 1982.
43. जैन तत्त्व कालिका, आचार्य श्री आत्माराम जी म०, आत्माराम ज्ञान पीठ मानसा, सन् 1982.
44. जैन तत्त्व प्रकाश, पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी म०, श्री अमोलक जैन ज्ञानालय, धुलिया, वि०सं० 1995.
45. जैन दर्शन, डॉ० मोहन लाल मेहेता, संमति ज्ञानपीठ, आगरा, सन् 1956.
46. जैन दर्शन और कबीर : एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ० मंजु श्री जी म० आदित्य प्रकाशन, एफ-14/65, मॉडल टाउन-2, दिल्ली, सन् 1992.
47. जैन दर्शन : स्वरूप और विश्लेषण, श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री, सर्कल, उदयपुर, वि०सं० 2032.

48. जैनधर्म का मौलिक इतिहास, आचार्य श्री हस्तीमल जी म०, प्रका० जैन इतिहास समिति, जयपुर, सन् 1971.
50. जैनधर्म के प्रभावक आचार्य, साध्वी संघमित्रा, जैन विश्व भारती लाडनूं, वि०सं० 2036.
51. जैन लक्षणवली, (सं०) श्री बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री, वीर सेवा मन्दिर, दरिया गंज, दिल्ली, सन् 1972.
52. जैन सिद्धान्त तुलसी, आदर्श साहित्य संघ चूरू (राज०) सन् 1982.
53. जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष-क्षु० जिनेन्द्र वर्णी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 1986.
54. जीवाभिगमसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर।
55. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर।
56. तत्त्वार्थाधिगम भाष्य, (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) आ० उमास्वाति, (सं०) व्याकरणाचार्य पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा, प्रका० परमश्रुत प्रभावक मण्डल, बम्बई, वि०सं० 1989.
57. तत्त्वार्थराजवार्तिक, भट्टाकलंक देव, (सं०) पं० महेन्द्र कुमार जैन भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, सन् 1990.
58. तत्त्वार्थवृत्ति, श्रुतसागर सूरि-(सं०) पं० महेन्द्र कुमार जैन भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, सन् 1949.
59. तत्त्वार्थसूत्र, (सं०) पं० सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यारश्र शोध संस्थान, जैन इंस्टिट्यूट, आई०टी०आई० रोड वराणसी, सन् 1976.
60. तपागच्छ पट्टावली, स्वोपज्ञ वृत्ति, (सं०) पं० श्री कल्याण विजय जी।
61. तित्थोगालि, श्वेताम्बर जैन संघ, जालोर।
62. तिलोयपण्णति, आचार्य यति वृषभ प्रणीत, अनु० आर्यिका विशुद्धमति, (सं०) डॉ० चेतनप्रकाश पाटनी, प्रकाशन विभाग, श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, कोटा, सन् 1984.
63. तैत्तरीयोपनिषद्, संस्कृति संस्थान, बरेली।
64. दशवैकालिक चूर्णि, जिनदास महत्तर, प्रका० सेठ देवचन्द्र लाल भाई, जैन पुस्तकोद्धार फण्ड सूरत, वि०सं० 1984.

65. दशवैकालिकसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, सन् 1985.
66. दंसण पाहुड (अष्टपाहुड़), (सं०) पन्नालाल जी साहित्याचार्य, श्री शान्ति वीर दिगम्बर जैन संस्थान, श्री शान्तिवीर नगर, श्री महावीर जी वीर, वि०सं० 2494.
67. दशाश्रुतस्कन्ध, (त्रीणि छेद सूत्राणि) (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1991.
68. दा जैन रिलीजन एण्ड लिट्रेचर, एच०आर० कापड़िया, मोती लाल बनारसीदास जैन, लाहौर, सन् 1944.
69. दिव्य संदेश पत्रिका, (युवा चेतना विशेषांक), (सं०) मुनि श्री रत्नसेन विजय जी, मरुधर जैन नवयुवक मण्डल, नारायणपुरा क्रॉसिंग, अहमदाबाद। दीर्घनिकाय, नालन्दा संस्करण 1958.
70. धर्मविन्दु (प्रकरण), आचार्य हरिभद्रसूरि, अहमदाबाद, सन् 1950.
71. धर्म संग्रह, पी०एल० वैद्य, बुद्धिस्ट संस्कृत टैक्ट्स, दरभंगा, सन् 1961.
72. धर्मोपदेश पीयूषवर्ष, श्रावकाचार संग्रह-2 (सं०) पं० श्री हीरालाल जी सिद्धान्तलंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1976.
73. नन्दी सूत्र, (सं०) आचार्य श्री आत्मा राम जी म०, आचार्य श्री आत्मा राम जेन प्रकाशन समिति, लुधियाना, सन् 1966.
74. नियमसार, (सं०) उग्रसेन जी, द सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाऊस, लखनऊ, सन् 1931.
75. निरयावलिका, (सं०) उप श्री स्वर्ण कान्ता जी म०, प्रका० 25वीं महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति, विमल कोल डिपू, मालेरकोटला, सन् 1994.
76. निरुक्त : एक समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ० कपिलदेव शास्त्री, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, सन् 1993.
77. निशीथ चूर्णि, (जिन दा सगणि महत्तर) (सं०) उपाध्याय श्री अमर मुनि, सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामण्डी, आगरा, सन् 1957.
78. निर्ग्रन्थ प्रवचन, श्री चौथमल जी म०, श्री दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, ब्यावर, सन् 1966.
76. नीति शतक, (भर्तृहरि) अनु० बाबू हरिदास वैद्य, प्रका० हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, मथुरा, सन् 1957.

80. परिशिष्ट पर्व, (आ० हेमचन्द्र) अनु० मुनि श्री तिलक विजय जी 'पंजाबी' आत्मतिलक ग्रन्थ सोसायटी, अहमदाबाद, सन् 1918.
81. परीक्षा, श्रीमणिक्यनन्दि स्वामि विरचित, अनेकान्त सिद्धान्त समिति, लोहारिया, जि० बांसवाड़ा, वि० संवत, 1989-90.
82. पाइअ-सद्द-महण्णवो, पं० हरगोविन्द दास विक्रमचन्द सेठ, प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी, सन् 1963.
83. पातञ्जल योगदर्शन, (सं०) स्वामी श्री ब्रह्मलीन मुनि, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
84. पुरुषार्थानुशासन, श्रावकाचार संग्रह-3, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर, सन् 1977.
85. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरा लाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1977.
85. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरा लाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1976.
86. पूज्यपाद श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-3, (सं०) पं० हीरा लाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1977.
87. प्रवचनसार, (आ कुन्दकुन्द) अनु० श्री परमेष्ठी दास जी न्यायतीर्थ, प्रका० श्री वीतराग सत् साहित्य प्रचारक ट्रस्ट, भावनगर, वि०स० 2032.
88. प्रवचन सारोद्धार, श्री मद् नेमिचन्द्र सूरि, जैन पुस्तकोद्धार संस्था, निर्णय सागर प्रेस, सन् 1922.
86. प्रश्नव्याकरण सूत्र-(सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1983.
90. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-2, (सं०) पं० हीरा लाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर, 1976.
91. प्रशमरति-1, अनु० श्री भद्रगुप्त विजय जी गणीवर, श्री विश्व कल्याण प्रकाशन ट्रस्ट, कम्बोई नगर के पास मेहसाणा, वि०सं० 2040.
92. प्रज्ञापनासूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि० श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, सन् 1983.
93. प्रभावक चरित्र, प्रभाचन्द्राचार्य, सिन्धी जैन ग्रन्थमाला अहमदाबाद।

94. प्रमाण-नय-तत्त्वालोकालंकार, पं० शोभाचन्द भारिल्ल, आत्म जागृति कार्यालय, श्री जैन गुरुकुल शिक्षण संघ ब्यावर, वि०सं० 1999.
65. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी, सन् 1966.
69. प्राकृत व्याकरण-1. (आचार्य हेमचन्द्र) व्या० उपाध्याय श्री प्यार चन्द जी म०, श्री दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी, बाजार, ब्यावर, वि०सं० 2410.
67. प्राकृत साहित्य का इतिहास, डॉ० जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सन् 1961.
68. भगवती आराधना, (विजयोदया टीका सहित), भाग-1, 2, आ० शिवार्य (सं० एवं अनु०) पं० कैलाश चन्द, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, सन् 1978.
66. भगवती सूत्र, (सं०) मुनि श्री कन्हैया लाल जी, अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन शास्त्रोद्धार समिति, राजकोट, सन् 1965.
100. भगवान् महावीर : एक अनुशीलन, श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, वि०सं० 2031.
101. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ० हीरा लाल जैन, मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् भोपाल, सन् 1962.
102. मंगलवाणी, अखिलेश मुनि, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा, सन् 1995.
103. महापुराण, आचार्य जिनसेन (सं० एवं अनु०) पं० पन्ना लाल साहित्याचार्य, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सन् 1944.
104. महर्षि व्यास, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2045.
105. मनुस्मृति, देवदत्त शास्त्री, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर, सन् 1962.
106. मुनि श्री हजारी मल स्मृति ग्रन्थ, (सं०) शोभाचन्द्र भारिल्ल, मुनि हजारी मल स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति, ब्यावर, सन् 1965.
107. मूलाचार, आ० बट्टकेर, टीकानु आर्यिकारत्न ज्ञानमती जी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, वि०सं० 2041.
108. मूलाराधना, आ० अमितगति, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।
109. योगशास्त्र, आ० श्री हेमचन्द्र, (सं०) पं० मुनि श्री नेमि चन्द्र जी, संजय साहित्य प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, सन् 1975.

110. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
111. रायप्रश्नीयसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1982.
112. लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, (सं०) पं० प्रद्युम्न विजय गणि, श्रीश्रुत ज्ञान प्रसारक सभा, अहमदाबाद, सि०सं० 2519.
113. लाटी संहिता, श्रावकाचार संग्रह-3, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
114. वसुनन्दि श्रावकाचार, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर, सन् 1976.
115. विपाकसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1982.
116. विविधतीर्थकल्प, (सं०) श्री जिन विजय अधिष्ठाता, सिंधी जैन ज्ञानपीठ, शान्ति निकेतन, बंगाल।
117. विशेषावश्यक भाष्य, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, (सं०) मुनि राजेन्द्र विजय जी म०, दिव्यदर्शनकार्यालय अहमदाबाद, वीर सं० 2488.
118. विसुद्धिमग्ग, आचार्य बुद्धघोष, (सं०) धर्मानन्द कौशाम्बी, भारतीय विद्या भवन, बम्बई सन् 1940.
119. वृहत्कल्पभाष्य, संघदासगणि (सं०) मुनि चतुर्विजय पुण्यविजय, जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, वि०सं० 1990.
120. व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म०, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1982.
121. षट्खण्डागम, धवला टीका 1-2, आचार्य वीर सेन, जैन साहित्योद्धारक फण्ड कार्यालय, अमरावती, सन् 1939.
122. श्राद्धगुणविवरण, (अनु०) पन्यास श्री सोहन विजय जी म०, मंत्री श्री आत्मानन्द जैन ट्रस्ट सोसायटी, अम्बाला शहर, सन् 1924.
123. श्रावक कर्त्तव्य, मुनि सुमन कुमार, पूजय श्री कांशीराम स्मृति ग्रन्थमाला, जैन बाजार, अम्बाला शहर, वि०सं० 2022.
124. श्रावक धर्म, महासती उज्जवल कुमारी, सन्मति ज्ञानपीठ, लोहा मण्डी, आगरा, सन् 1961.

125. श्रावक धर्म दर्शन, उमा० श्री पुष्कर मुनि जी म०, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, सन् 1978.
126. श्रावक धर्म प्रदीप, आ० कुन्थु सागर जी, प्रका० श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी, सन् 1980.
127. श्रावक प्रज्ञप्ति, उमा स्वाति, मुनि राजेन्द्र विजय, संस्कार साहित्य सदन, डीसा, वि०सं० 2028.
128. श्रीमद् बाल्मीकीय रामायण, मूल, गीताप्रेस, गोारखपुर, वि०सं० 2042.
129. श्रीमद् भागवद्गीता, मूल गीता, प्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2031.
130. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराज आप्टे, मोती लाल बनारसी दास जैन, दिल्ली, सन् 1977.
131. संस्कृत प्राकृत जैन व्याकरण व कोश की परम्परा, सं० मुनि दुलहराज, छगनलाल शास्त्री, श्री कालुगणि जन्म शताब्दी समारोह समिति, छापर, सम्वत् 2033.
132. समण सुतं, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, सन् 1975.
133. समवायांग वृत्ति, आचार्य अभयदेव सूरि, आगमोदय समिति मेहसाणा, सन् 1918.
134. समवायांग सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर।
135. सागारधर्मामृत, पं० आशाधर, सरल जैन ग्रन्थ भण्डार, जबलपुर, वीर सं० 2482.
136. सावयधम्मदोहा, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
137. समीचीन धर्मशास्त्र, भाष्यकार जुगलकिशोर मुख्तार, वीर सेवा मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली, वि०सं० 2011.
138. सम्यक्त्व कौमुदी, (सं०) डॉ० पन्नालाल जी सागर, अनेकान्त सिद्धान्त समिति, लोहारिया, जिला बांसवाडा, वि०सं० 1989-90.
139. सर्वार्थसिद्धि, आ० पूज्यपाद, (सं०) पं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, वि०सं० 2000.
140. सुत्तनिपात, (निकाय ग्रन्थ) अनु० भिक्षु धर्मरत्न, महाबोधि, सभा, सारनाथ, सन् 1960.

141. सुधर्मश्रावकाचार, (सं०) पं० मक्खन लाल शास्त्री, जैन साहित्य सदन, चांदनी चौक, दिल्ली, वीर सं० 2501.
142. सूत्रकृतांगसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1982.
143. स्टडीज़ इन जैन फिलॉसफी, नथमल टाटिया, जैन कल्चरल रिसर्च सोसायटी, वाराणसी, सन् 1951.
144. स्थानांग सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1987.
145. स्याद्वाद मञ्जरी, मल्लिषेणसूरि-(सं०) डॉ० जगदीशचन्द्र शास्त्री, परमश्रुत प्रभावक मण्डल, जोहरी बाजार, बम्बई, सन् 1935.
147. त्रिषटिशलाकापुरुषचरित्र, हेमचन्द्राचार्य, श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर, सं० 2447.
148. ज्ञाताधर्मकथासूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर सन् 1981.
149. ज्ञानार्णव, श्री शुभचन्द्राचार्य-(सं०) डॉ० श्री हीरालाल जैन, प्रका० जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1977.

125. श्रावक धर्म दर्शन, उमा० श्री पुष्कर मुनि जी म०, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, सन् 1978.
126. श्रावक धर्म प्रदीप, आ० कुन्थु सागर जी, प्रका० श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी, सन् 1980.
127. श्रावक प्रज्ञप्ति, उमा स्वाति, मुनि राजेन्द्र विजय, संस्कार साहित्य सदन, डीसा, वि०सं० 2028.
128. श्रीमद् बाल्मीकीय रामायण, मूल, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2042.
129. श्रीमद् भागवद्गीता, मूल गीता, प्रेस, गोरखपुर, वि०सं० 2031.
130. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराज आप्टे, मोती लाल बनारसी दास जैन, दिल्ली, सन् 1977.
131. संस्कृत प्राकृत जैन व्याकरण व कोश की परम्परा, सं० मुनि दुलहराज, छगनलाल शास्त्री, श्री कालुगणि जन्म शताब्दी समारोह समिति, छापर, सम्वत् 2033.
132. समण सुतं, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, सन् 1975.
133. समवायांग वृत्ति, आचार्य अभयदेव सूरि, आगमोदय समिति मेहसाणा, सन् 1918.
134. समवायांग सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर।
135. सागारधर्मामृत, पं० आशाधर, सरल जैन ग्रन्थ भण्डार, जबलपुर, वीर सं० 2482.
136. सावयधम्मदोहा, श्रावकाचार संग्रह-1, (सं०) पं० हीरालाल सिद्धान्तालंकार, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1976.
137. समीचीन धर्मशास्त्र, भाष्यकार जुगलकिशोर मुख्तार, वीर सेवा मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली, वि०सं० 2011.
138. सम्यक्त्व कौमुदी, (सं०) डॉ० पन्नालाल जी सागर, अनेकान्त सिद्धान्त समिति, लोहारिया, जिला बांसवाडा, वि०सं० 1989-90.
139. सर्वार्थसिद्धि, आ० पूज्यपाद, (सं०) पं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, वि०सं० 2000.
140. सुत्तनिपात, (निकाय ग्रन्थ) अनु० भिक्षु धर्मरत्न, महाबोधि, सभा, सारनाथ, सन् 1960.

141. सुधर्मश्रावकाचार, (सं०) पं० मक्खन लाल शास्त्री, जैन साहित्य सदन, चांदनी चौक, दिल्ली, वीर सं० 2501.
142. सूत्रकृतांगसूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1982.
143. स्टडीज इन जैन फिलॉसफी, नथमल टाटिया, जैन कल्चरल रिसर्च सोसायटी, वाराणसी, सन् 1951.
144. स्थानांग सूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर, सन् 1987.
145. स्याद्वाद मञ्जरी, मल्लिषेणसूरि-(सं०) डॉ० जगदीशचन्द्र शास्त्री, परमश्रुत प्रभावक मण्डल, जोहरी बाजार, बम्बई, सन् 1935.
147. त्रिषटिशलाकापुरुषचरित्र, हेमचन्द्राचार्य, श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर, सं० 2447.
148. ज्ञाताधर्मकथासूत्र, (सं०) युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकाशन समिति, पीपलिया बाजार, ब्यावर सन् 1981.
149. ज्ञानार्णव, श्री शुभचन्द्राचार्य-(सं०) डॉ० श्री हीरालाल जैन, प्रका० जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, सन् 1977.